हिन्द स्वराज : नव सभ्यता विमर्श

वीरेन्द्र कुमार बरनवाल

गांधी जी की कृति 'हिन्द स्वराज' का यह शताब्दी वर्ष है। सौ साल पहले लिखी गयी इस पुस्तक ने नये सिरे से उत्तर आधुनिक संसार का ध्यान आकृष्ट किया है और बेमिसाल प्रासंगिता अर्जित की है। इस पर लिखने के लिए हमने 'जिन्ना : एक पुनर्दृष्टि' जैसे ग्रंथ के रचनाकार वीरेन्द्र कुमार बरनवाल से आग्रह किया। उनका लेख आपके सम्मुख है लेकिन यहां हम बताना चाहते हैं कि इस लेख को लिखते हुए वह गांधी जी की सम्पूर्णता में इस तरह शामिल हुए कि अब वह उन पर पूरी किताब लिख रहे हैं। जाहिर है उसमें 'हिन्द स्वराज' पर इस लेख से इतर भी बहुत कुछ होगा।

बुझी जाती थी शम्मा मशरिकी मगरिब की आंधी से
उम्मीदे रोशनी कायम है लेकिन भाई गांधी से

-अकबर इलाहाबादी

लगभग अस्सी पृष्ठों का 'हिन्द स्वराज' महात्मा गांधी के चिन्तन का बीज है। आगे यही बीज उनके विचारों के अक्षयवट के रूप में विकसित हुआ। बीसवीं सदी के पहले दशक के लगभग अंत में मूलतः गुजराती में तीस हजार शब्दों में लिखी गयी और स्वयं उन्हीं द्वारा अंग्रेजी में अनूदित इस पुस्तिका की तुलना मार्क्स एन्जिल्स द्वारा संयुक्त रूप से लिखित 'कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो', जॉन स्टुअर्ट मिल के 'ऑन लिबर्टी', रूसो के 'सोशल कांट्रैक्ट', सेण्ट इग्नैटियस लोयोला के 'स्प्रिचुअल एक्सरसाइसेज' और 'बाइबिल' में सेण्ट मैथ्यू अथवा सेण्ट ल्यूक के अध्याय चार के प्रवचनों से की गयी है। जैसे 'न्यू टेस्टामेण्ट' के इस अध्याय में प्रभु ईसा मसीह ने अपने जीवन के ईश्वरीय उद्देश्य की घोषणा की थी उसी तरह गांधी ने अपने आगामी सार्वजनिक जीवन के लक्ष्य और उसके प्राप्ति के मार्ग निर्देशक सिद्धांत 'हिन्द स्वराज' में निर्दिष्ट कर दिये थे। यह पुस्तिका उन्होंने समुद्री यात्रा के दौरान इंग्लैण्ड से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए दस दिनों में (13 नवम्बर से 22 नवम्बर 1909 के बीच) लिखी थी। चालीस

www.tadbhav.com

वर्षीय गांधी ने तब तक जो कुछ देखा पढ़ा था और जो कुछ सुना गुना था वह एक अर्से से उनके मनोमस्तिष्क में उथल पुथल मचा रहा था। समुद्री यात्रा के दौरान एक स्थिति ऐसी आयी कि उनके विचारों ने मानो उन्हें आविष्ट कर लिया था और उनसे रहा नहीं गया था। एक नैसर्गिक अंतःप्रेरणा के तहत जहाज के कागज पर ही उन्होंने गुजराती में उन्हें लिपिबद्ध करना प्रारम्भ कर दिया था और परिण ााम था – हिन्द स्वराज। इसके अंग्रेजी अनुवाद को पढ़ कर टॉलस्टॉय ने अपनी डायरी में लिखा था – 'अद्‌भुत'। पर गांधी के स्नेही प्रशंसक और राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की निगाह में यह एक मूर्ख व्यक्ति की रचना थी। यह गांधी ने स्वयं 'आर्यन पॉथ' के सितम्बर सन् 1938 के 'हिन्द स्वराज' अंक के लिए भेजे गये अपने संदेश (दिनांकित 14.7.1938) में बताया है। उनके राजनीतिक गुरु की ही तरह उनके सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक शिष्य जवाहर लाल नेहरू ने भी उसे यथार्थ से परे (अनरियल) पाया था। यह बात नेहरू ने गांधी को सम्बोधित अपने पत्र (दिनांकित 9.10.1945) में कही थी। गोखले और नेहरू के इन विचारों के बावजूद 'हिन्द स्वराज' अपनी रचना के सौ साल बाद आज भी प्रासंगिक बना हुआ है। जब साम्यवादी और पूंजीवादी सिद्धांतों पर निर्मित व्यवस्थाएं चरमरा कर बैठ गयी हैं, एक वैकल्पिक सोच के पुरोधा के रूप में गांधी और उनके चिन्तन की ओर विश्व के सुधीजन निगाह उठा कर एक बार फिर देख रहे हैं।

गांधी दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के अल्पतम नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह के दौरान कई बार जेलयात्रा के बाद अपना पक्ष इंग्लैण्ड के राजनेताओं और वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए ट्रांसवाल के एक समृद्ध व्यापारी सेठ हाजी हबीब के साथ 10 जुलाई सन् 1909 को लंदन पहुंचे थे। गांधी के पहले ही दक्षिण अफ्रीका से जनरल स्मट्स और जनरल बोया वहां पहुंच चुके थे। गांधी के वहां पहुंचने के कुछ ही दिन पूर्व पहली जुलाई को तरुण तेजस्वी मदन लाल धींगरा ने सर कर्जन वायली की हत्या कर दी थी। लार्ड चीफ जस्टिस के सामने उन्होंने निर्भीकता से अपने 'विनम्र प्रतिशोध की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली थी। उनका बयान राष्ट्रभक्ति का एक अत्यंत प्रेरक दस्तावेज था। चर्चिल, जो उस समय ब्रिटेन के उपनिवेश के अपर सचिव थे मदन लाल धींगरा के बयान में गहरे प्रभावित हुए थे। उनके अनुसार उक्त बयान देशभक्ति पर उनकी जानकारी में सर्वश्रेष्ठ बयान था। मदन लाल धींगरा के आत्मोत्सर्ग प्रेरित साहसिक कार्य से इंग्लैण्ड और हिन्दुस्तान में तरुणों की नसों में बिजली दौड़ गयी थी। गांधी अब तक अपने संघर्ष का मुहावरा तय कर चुके थे। उन्होंने सत्याग्रह का मार्ग अपने गंतव्य के लिए खोज लिया था। हिन्दुस्तानी तरुणों में देश की स्वतंत्रता के लिए हिंसा के मार्ग के प्रति बढ़ते आकर्षण ने उन्हें गहरी चिन्ता में डाल दिया था। गांधी ने धींगरा की देशभक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा था कि उन्होंने अपना बलिदान गलत ढंग से दिया। इसके परिणाम अनिष्टकारी हो सकते हैं। इसी लंदन प्रवास के दौरान गांधी ने पहली बार टॉलस्टॉय को पत्र लिखा। उस समय लंदन में हिन्दुस्तानी नवयुवकों के आकर्षण और प्रेरणा के दो महत्वपूर्ण केन्द्र थे। दादा भाई नौरोजी (1825 - 1917) और श्याम जी कृष्ण वर्मा (1857 - 1930)। दोनों भारतीय राष्ट्रवाद के दो ध्रुवों के प्रतिनिधि थे। दोनों गांधी की तरह मूलतः गुजराती थे। दादा भाई बम्बई के एक अत्यंत सम्मानित पारसी पुरोहित के परिवार में पैदा हुए थे। वहां के एलफिस्टन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर वह वहीं पर गणित और दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक हो गये थे। उन्होंने बम्बई में राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों के लिए 'इंडियन एसोसिएशन' नाम से एक संस्था बना रखी थी। सन् 1885 में तीस वर्ष की आयु में वह लंदन और पेरिस में कार्यरत एक व्यावसायिक फर्म के भागीदार बन गये थे। अतः अध्यापन कार्य से इस्तीफा देकर वह स्थायी रूप से बसने लंदन आ गये थे। फर्गूसन कॉलेज पूना में गोपाल कृष्ण गोखले के साथ प्राध्यापक रहे आर.पी. परांजपे (1876 - 1966) ने दादा भाई को इंग्लैण्ड के 'हिन्दुस्तानियों का स्वाभाविक नेता' कहा था। दादा भाई हिन्दुस्तान के उस प्रबुद्ध वर्ग के अग्रणी थे जो हिन्दुस्तान की प्रगति के लिए अंग्रेजों में उसके प्रति कर्तव्यबोध पैदा कर उनकी अंतरात्मा

www.tadbhav.com

को जगाना चाहते थे। साथ ही उनके आदृत प्रजातांत्रिक और उदार सामाजिक, राजनीतिक मूल्यों का वास्ता देकर औपनिवेशिक शासन व्यवस्था में अधिकाधिक सुधार और उसमें हिन्दुस्तानियों की समुचित भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते थे। समय समय पर तर्कसंगत ढंग से वह अपने भाषणों और लेखों द्वारा औपनिवेशिक शासन की कमियां रेखांकित करते हुए उसे दूर करने के लिए सुझाव भी देते रहते थे। इंग्लैण्ड में हिन्दुस्तानियों का पक्ष प्रभावशाली ढंग से रखने के लिए 'डेली न्यूज' नामक दैनिक से उन्होंने भारी शेयर खरीद लिये थे। 'इंडियन एसोसिएशन' की शाखा उन्होंने लंदन में भी स्थापित कर ली थी। यह संस्था मध्यममार्गी थी और हिन्दुस्तानियों के साथ अच्छी संख्या में अंग्रेज भी इसके सदस्य थे। हिन्दुस्तानी विद्यार्थी इसकी बैठकों में बड़ी संख्या में शामिल होते थे। हिन्दुस्तानी लोग न केवल आपस में बल्कि अंग्रेजों से भी अपनी स्थानीय और देश समस्याओं पर विचार विमर्श करते रहते थे। दादा भाई लिबरल पार्टी की ओर से हाउस ऑफ कामन्स के सदस्य भी रहे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय राष्ट्रवाद के विपरीत ध्रुवांत पर थे। उनकी विचारधारा लोकमान्य तिलक के नजदीक थी। वह एक गरीब ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। उनकी संस्कृत और अंग्रेजी शिक्षा कुछ सम्पन्न गुजराती सेठों की सहायता से सम्भव हो सकी थी। उनका संस्कृत ज्ञान अद्भुत था। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती और आक्सफोर्ड में संस्कृत के प्रोफेसर सर मोनियर विलियम्स उनके संस्कृत के पांडित्य से गहरे प्रभावित थे। आक्सफोर्ड से बी.ए., एम.ए. और कानून की डिग्री लेकर वह हिन्दुस्तान लौटे थे। वह बला के अध्यवसायी थे। जब सन् 1857 में वह इंग्लैण ड पहुंचे थे तो उनके पास छदाम नहीं था। पर जब पढ़ाई पूरी कर चार साल बाद वह हिन्दुस्तान सन् 1882 में लौटे तो उनके पास दो हजार पाउंड थे। अपनी पढ़ाई और लंदन में प्रवास का खर्च चलाने के लिए ट्यूशन के सहारे उन्होंने यह राशि बचायी थी। उनकी इस उपलब्धि को गांधी ने अनूठी कहा है। हिन्दुस्तान लौट कर वह कई रियासतों की सेवा में रहे। पर रियासतों में नियुक्त अंग्रेज अधिकारियों से उनका लगातार टकराव होता रहा। फलस्वरूप वह तिलक और उनकी विचारधारा की ओर उन्मुख हुए। इसी बीच पूने में प्लेग कमिश्नर वाल्टर चार्ल्स रैन्ड की ज्यादतियों से क्षुब्ध चाफेकर बंधुओं ने उसकी हत्या कर दी। फलस्वरूप उन्हें फांसी की सजा हुई। उनके साथियों को देश से निकाल दिया गया। श्याम जी कृष्ण वर्मा पर भी हत्या के षड्यंत्र में शामिल होने का संदेह था। पर किसी ठोस सबूत के अभाव में उन पर कोई कार्यवाही नहीं हो सकी। उन्होंने हमेशा के लिए सन् 1897 में देश छोड़ दिया और लंदन में बस गये। वहां उन्होंने एक आलीशान मकान खरीद कर उसका नाम 'इंडिया हाउस' रख दिया। उन्होंने 'इंडिया होम रूल सोसाइटी' की स्थापना कर 'इंडियन सोशियोलाजिस्ट' नामक एक पत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ कर दिया। उनके घर का द्वार हिन्दुस्तानी नवयुवकों और छात्रों के लिए सदैव खुला रहता था। वह क्रांति और हिंसा के मार्ग में विश्वास रखते थे। उनकी मांग पूर्ण स्वराज की थी। अक्तूबर सन् 1906 में जब गांधी एक प्रतिनिधिमंडल में एच.ओ. अली के साथ ट्रांसवाल के 'काले कानून' के खिलाफ जनमत तैयार करने लंदन गये थे, तो उनकी भेंट श्याम जी कृष्ण वर्मा से हुई थी। वह 'इंडिया हाउस' में कुछ दिन रुके भी। वहां के आतिथ्य की उन्होंने प्रशंसा की है। इसी बीच सन् 1906 में गांधी के लंदन पहुंचने के पहले दामोदर विनायक सावरकर और लाला हरदयाल भी लंदन पहुंच गये थे। दोनों लोकमान्य की विचारधारा से प्रभावित थे। वस्तुतः सावरकर तो तिलक की सिफारिश पर छात्रवृत्ति के सहारे वहां पहुंचे थे। जब गांधी एक छात्र के रूप में लंदन पहुंचे थे तो वहां दादा भाई की स्थिति हिन्दुस्तानियों खासकर छात्रों के बीच अद्वितीय थी। पर अब उन्नीसवीं सदी के अंत में और बीसवीं सदी के प्रारम्भ में स्थिति एकदम बदल चुकी थी।

हिन्दुस्तानी छात्र इंग्लैण्ड में ज्यादातर इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, दर्शन, राजनीति, अर्थशास्त्र और कानून की पढ़ाई करने के लिए आ रहे थे। फ्रांस की क्रांति, अमेरिका का स्वतंत्रता संघर्ष, आयरलैण ड की स्वायत्तता की मांग में आती उग्रता, गैरीबाल्डी, विस्मार्क और मैजिनी के राष्ट्रवादी विचार और

www.tadbhav.com

उनके प्रेरक कार्यों से हिन्दुस्तानी तरुण समाज भलीभांति परिचित हो चला था। इसके अतिरिक्त कई छात्र इंग्लैण्ड के अलावा फ्रांस, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी और जापान इंजीनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, वाणिज्य और विज्ञान के भी अध्ययन के लिए पहुंच रहे थे। हिन्दी के प्रसिद्ध निबंधकार अध्यापक पूर्ण सिंह ने जापान और पं. जवाहर लाल नेहरू ने कैम्ब्रिज में विज्ञान की पढ़ाई की थी। मदन लाल धींगरा लंदन में इंजीनियरिंग के विद्यार्थी थे। मैडम भीखा जी कामा (1861 - 1936) भी लंदन और बाद में फ्रांस में विद्यार्थियों के आकर्षण केन्द्र में रहीं। पहले उन्होंने दादा भाई के सम्पर्क में रह कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए काम किया था। पर कुछ समय बाद वह श्याम जी कृष्ण वर्मा, सावरकर, लाला हरदयाल और लेनिन के सम्पर्क में आयीं। इसके बाद उनका राजनीतिक मुहावरा बदल गया। सन् 1909 में वह पेरिस चली गयीं। वह आयरलैण्ड, जर्मनी, रूस, फ्रांस तथा मिस्र के क्रांतिकारी विचारधारा के लोगों के सम्पर्क में लगातार बनी रहीं। हिंसक क्रांति की श्याम जी कृष्ण वर्मा की विचारधारा तरुणों को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींच रही थी। सन् 1906 में कांग्रेस के नरम और गरम दल में विभाजन के समय श्याम जी कृष्ण वर्मा और उनके अनुयायियों की सहानुभूति निश्चय ही गरम दल खासकर लोकमान्य तिलक के साथ थी। पर गरम दल के नेताओं लाल बाल पाल (लाला लाजपत राय, बाल गांगाधर तिलक, विपिन चंद्रपाल) तथा उनके समर्थकों का विश्वास कम से कम प्रत्यक्षतः हिंसक क्रांति के मार्ग में नहीं था। अरविन्द घोष (1872 - 1950) इसके एकमात्र अपवाद थे। हिन्दुस्तान के दो जागृत प्रांतों बम्बई प्रेसीडेन्सी के महाराष्ट्र और कलकत्ता प्रेसीडेन्सी के बंगाल में क्रमशः दो क्रांतिकारी संगठन अभिनव भारत और अनुशीलन समिति का गठन हो चुका था। अभिनव भारत की शाखा लंदन में भी सक्रिय थी। पर उसमें असली जान मैडम कामा के उससे जुड़ने के बाद ही आयी। दरअसल उन्हें हिन्दुस्तानी 'क्रांति की जननी' के रूप में याद किया जाता रहा है। उन्हें उनके अनुयायिओं और प्रशंसकों का एक बड़ा वर्ग 'काली का अवतार' मानता था। वह पेरिस से 'वंदे मातरम' नाम से एक पत्र निकालती थीं। पेरिस में उनके पहले गुजरात की एक रियासत लिम्बडी के राजकुमार सरदार सिंह रेवा भाई राना (एस.आर. राना) राष्ट्रवादी गतिविधियों में सक्रिय थे। उनकी राजनीतिक सक्रियता के फलस्वरूप अंग्रेजों ने उनकी रियासत जब्त कर ली थी। वह पेरिस में मोती के व्यवसाय में लगी एक फर्म से जुड़े थे और उन्होंने फ्रांस की नागरिकता हासिल कर ली थी। वह एक समृद्ध व्यक्ति थे। उन्होंने इंग्लैण्ड और योरोप में शिक्षा प्राप्त करने के लिए हिन्दुस्तानी नवयुवकों के लिए कई छात्रवृत्तियां चला रखी थीं। उनके रूस के क्रांतिकारियों के साथ गहरे सम्बंध थे। दरअसल वह हिन्दुस्तानी और रूसी क्रांतिकारियों के बीच एक सशक्त सेतु थे। जून 1907 में श्याम जी कृष्ण ा वर्मा भी पेरिस पहुंच गये थे।

लंदन में श्याम जी कृष्ण वर्मा का 'इंडिया हाउस' क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ था। वहां पर अंग्रेज अधिकारियों की हत्या तथा राजनीतिक हिंसा की योजनाएं गोपनीय रूप से बनती रहती थीं। हिन्दुस्तान से गये अच्छी खासी संख्या में तरुण छात्रों का शरणस्थल होने के कारण ा उन पर 'इंडिया हाउस' का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। कलकत्ता के माडर्न रिव्यू ने इस प्रभाव को अनिष्टकारी बताया था। उसने अपने एक सम्पादकीय में लिखा था कि इंग्लैण्ड में पढ़ने गये युवकों के आवास आदि की कुछ ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वह इस प्रकार की हिंसक राजनीतिक गतिविधियों के दुष्प्रभाव से बचे रह सकें और अपनी पढ़ाई के साथ राजनीतिक प्रगति के फलस्वरूप पूर्ण नागरिक गुणों का अपने व्यक्तित्व में विकास कर सकें।

यह था हिन्दुस्तानी तरुणों के लिए इंग्लैण्ड और योरोप का राजनीतिक वातावरण जब गांधी जुलाई सन् 1909 में लंदन पहुंचे थे। कुछ ही माह बाद 'हिन्द स्वराज' में उतरने वाले विचारों की उथल पुथल से उनका मानस विकल था। गांधी ने विश्व इतिहास के मंच पर अपने देश हिन्दुस्तान से नहीं बल्कि सात समुंदर पार एक अज्ञात कुलशील देश दक्षिण अफ्रीका से प्रवेश किया था। पर वह

www.tadbhav.com